<u>शोध-प्रारूप</u>

झारखण्ड आंदोलन में नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का योगदान

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग
जे.एन. कॉलेज, धुर्वा
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्त्ता

आकाश वर्मा
यू.जी.सी. नेट /जे.आर.एफ.
नागपुरी विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी वि.वि., राँची

झारखण्ड आंदोलन में नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का योगदान

भूमिका:- झारखण्ड प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारधाराओं का स्थल रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व राज्य में हुए जनजातीय विद्रोह एवं पृथक राज्य निर्माण का आंदोलन इसका जीता जागता उदाहरण है। झारखण्ड आंदोलन ने देश के सबसे पुराने आंदोलनो में से एक होने का संदिग्ध गौरव हासिल कर लिया है। 1912 में क्रिश्चियन स्टूडेंट्स ऑगेनाइजेशन के गठन से लेकर 1995 में तथाकथित शिबू सोरेन के झारखण्ड क्षेत्र स्वशासी परिषद् (JAAC - जैक) के गठन तक, पिछले 70 वर्षो से छोटानागपुर के नागपुरी साहित्यकारों के भीतर अलग राज्य मांग के लिए संघर्ष कर रहे थे। आंदोलन ने उतार चढ़ाव देखा है , केन्द्र और, राज्य दोनो कानून बनाने वाली संस्थाओ में कई विधायक भेजे है अधिक व्यापक आधार , बन गया है लेकिन झारखण्ड राज्य एक दूर का लक्ष्य प्रतीत होता था।

हमारी दृष्टि में झारखण्ड भौतिक और आर्थिक दृष्टि से एक समृद्ध राज्य है। इसका प्राकृतिक परिवेश मनोरम और ऐश्वर्य - मंडित है। यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहर , सभी को नेतृत्व देने में सक्षम है। नागवंशी राजाओ में से कई राजा कवि , लेखक और रचनाकार रहे है। नागवंशी राजा रधुनाथ शाह , एक कवि और रामगढ़ के राजा दलेल सिंह एक रचनाकार थे हनुमान सिंह , जयगोविंद मित्र , बरजू राम , महाकवि घासी राम नागपुरी के रचनाकार रहे है , डॉ० बी. पी. केसरी नागपुरी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं झारखण्ड आंदोलन में प्रमुख योगदान रहा है साथ ही साथ मधु मंसुरी हँसमुख , प्रफुल्ल कुमार राय, सहनी उपेन्द्र पाल "नहन", रामदयाल मुण्डा, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, खालिक अहमद, भीम महतो, मुकुन्द नायक, गिरिधारी राम "गौंझु" आदि। का प्रमुख स्थान रहा है झारखण्ड को अलग राज्य का दर्जा देने की माँग के साथ शुरू होने वाला एक सामाजिक राजनीतिक आंदोलन था इसकी शुरूआत 20वीं सदी के शुरूआत मे हुई। इसी प्रकार झारखण्ड की मिट्टी से बहुत से नागपुरी साहित्यकारो ने जन्म लिया जिन्होने अपनी धरती माँ को बचाने के

लिए अपनी कुर्बानी दी इन वीरो को उत्साह देनेवाले लोग भी थे कुछ ने आंदोलन के साथ-साथ अपनी कविता लेखनी से भी झारखण्ड आंदोलन को मजबूती प्रदान की, इसमे से एक प्रमुख नाम झारखण्ड आंदोलनकारी स्व. लाल रणविजय नाथ शाहदेव का है यदि गीतो से काम नही चलता , तो साहित्य गढ़ कर बताते वे जेपी आंदोलन में सक्रिय भी रहे है इसके गीतो में से प्रमुख :- आजादी खातिर

सलगत अब क्रांति ज्वाल,

धधकल ज्वाला विशाल,

ई बन प्रान्तरे,

बहुत दिन जुंगियाल

भीतरे-भीतरे आइ

भेल तइयार आजादी खातिरे

झारखण्ड एक वृहत्तखनिज एवं धन-संपदा से परिपूर्ण है। इसके भौगोलिक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वास्ताविकता है। झारखण्ड आंदोलन में नागपुरी साहित्यकारो ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाऐ रखा है।

प्रेरणा:- झारखण्ड आंदोलन मे नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का एक विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण रहा है। झारखण्ड में अनेक प्रकार के आंदोलन हुए लेकिन नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का योगदान प्रमुख रहा है। चूँकि इसका इतिहास भी भरा-पूरा है। नागपुरी साहित्य में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक साहित्यकार होते रहे है। जिन्होंने अपनी रचना एवं काव्य सौन्दर्य से साहित्य को निरंतर आगे बढ़ाते रहे हैं| नागपुरी जैसे भाषा साहित्य का महत्त्व परिपेक्ष्य में बहुत अधिक हो गया है आज से नागपुरी साहित्यकारो का योगदान झारखण्ड

में धारा प्रवाहित हो रही है। इस प्रवाहित धारा को आगे बढ़ाने में अनेक साहित्यकारो ने अपना योगदान दिया है।

उपर्युक्त झारखण्ड आंदोलन में साहित्यकारो की विकास यात्रा के योगदान ने मुझे हमेशा अपने साहित्यकारो को जानने के लिए प्रेरित किया है यही कारण है कि - मैं इस शोध विषय **"झारखण्डआंदोलनमेंनागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का योगदान**"कोपुराकरनेकीइच्छारखताहूँ।

शोध का उद्देश्य:-

1. झारखण्ड आंदोलन में नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो के योगदान के बारे में बतलाना।
2. नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो की प्रवृति को बतलाना।
3. झारखण्ड अलग होने में नागपुरी साहित्यकारो का प्रभाव किस प्रकार है इसको विस्तार देना।
4. झारखण्ड राज्य अलग होने में अन्य आंदोलन का और नागपुरी साहित्यकारो का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा स्पष्ट करना।
5. नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का परिचय देना।
6. आधुनिक नागपुरी साहित्यकारो के समय में स्थान को बतलाना।

शोध विधि:- निम्नलिखित विधियो के द्वारा शोध कार्य किये जा सकते है-

1. ग्रंथोएवं पुस्तको का अध्ययन
2. पत्र-पत्रिकाओं एवं विभिन्न आलेख का अध्ययन
3. क्षेत्रीय नागपुरी साहित्यकारो का अध्ययन एवं सर्वेक्षण

4 .व्यक्तिगत संपर्क एवं साक्षात्कार

5. तुलनात्मक अध्ययन

6. विश्लेषणात्मक अध्ययन

7. आलोचनात्मक अध्ययन

उपकरण - निम्नलिखित साम्रगी शोध कार्य के लिए उपयोग किये जा सकते है -

1. शोध से संबंधित पुस्तके ,प्रकाशित रचनाए,संदर्भ हेतु ग्रंथ हेतु पुस्तको का अध्ययन।
2. पत्र-पत्रिकाए जैसे - गोतिया ,डहर, प्रभातखबर, जय झारखण्ड,आदिवासी,संगम,दैनिक भास्कर, नागपुरी पत्रिका इत्यादि।
3. ऑडियो रिकॉर्डर (साक्षात्कार, सभा आदि के लिए जरूरत)
4. कैमरा (आवश्यक चित्रो एवं विडियो वगैरह तैयार करने के लिए)
5. मोबाईल।
6. कम्प्यूटर (जानकारी एकत्र हेतु)
7. इंटरनेट का संचालन।
8. कलम,पेपर,नक्शा इत्यादि।

प्रथम अध्याय - झारखण्ड का संक्षिप्त इतिहास -

- झारखण्ड का इतिहास
- मध्यकाल में झारखण्ड

- झारखण्ड राज्य निर्माण आंदोलन
- झारखण्ड: ऐतिहासिक क्रम

द्वितीयअध्याय- साहित्यकारो के संदर्भ में -

- आंदोलन के विभिन्न रूप-रेखा
- राजनैतिक परिचय
- सामाजिक प्रभाव
- आर्थिक दृष्टिकोण
- गीत/संगीत माध्यम
- साहित्यिक दृष्टिकोण

तृतीय अध्याय- नागपुरी के प्रमुख साहित्यकारो का परिचय-

- प्रफुल्ल कुमार राय
- शारदा प्रसाद शर्मा
- सहनी उपेन्द्र पाल 'नहन '
- डॉ० बी० पी० केशरी
- नईम उद्दीन मिरदाहा
- भुनेश्वर अनुज
- रामदयाल मुण्डा
- लाल रणविजय नाथ शाहदेव
- सी० डी० सिंह
- क्षितिज कुमार राय
- भीम महतो
- भरत नायक
- काली कुमार 'सुमन'

- महावीर नायक
- मधु मंसुरी हँसमुख
- अशोक पागल
- प्रमोद कुमार राय
- मुकुन्द नायक
- गिरिधारी राम 'गौंझू'

चतुर्थ अध्याय- झारखण्ड आंदोलन के विभिन्न संगठन -

- क्रिश्चियन स्टूडेटस ऑर्गेनाइजेशन (1912 ई०)
- छोटानागपुर उन्नति समाज (1915 ई०)
- किसान सभा (1930 ई०)
- छोटानागपुर कैथोलिक सभा (1933 ई०)
- आदिवासी महासभा (1938 ई०)
- झारखण्ड पार्टी (1950 ई०)
- बिरसा सेवा दल (1965 ई०)
- हुल झारखण्ड पार्टी (1969 ई०)
- सोनोत संथाल समाज (1970 ई०)
- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (1973 ई०)
- ऑल झारखण्ड स्टूडेन्ट्स एसोसिएशन (1986 ई०)
- झारखण्ड समन्वय समिति (1987 ई०)
- झारखण्ड क्षेत्र स्वशासी परिषद् (1995 ई०)
- राज्य गठन-अंतिम चरण (1997 - 2000 ई०)

पंचम अध्याय- झारखण्ड आंदोलन के विभिन्न कवियों की प्रमुख रचनाऐ-

- कड़कि उठलयँ तरवारी (प्रफुल्ल कुमार राय)

- आजादी खातिर (लालरणविजय नाथ शाहदेव)
- नागपुरक भाइमन (भीम महतो)
- नइ मेटी (विसेश्वर प्रसाद केशरी)
- जागा-जागा (सी॰डी॰ सिंह)
- आइज कर नागपुर (महेश्वर दास गुप्ता)
- नागपुरी बीर जवान (काली कुमार 'सुमन')
- तोहरे (खालिक अहमद)
- श्रद्धांजली (सुरेश चन्द्र राय)
- नागपुर कर कोरा (मधु मंसूरी 'हँसमुख')
- जागु जवान (मुकुंद नायक)

षष्ठ अध्याय- अन्य साहित्यकारो का भूमिका -

- कुमारी बासंती
- शिव अवतार चौधरी
- मनोहर महंती
- अजीज अंसारी
- कृष्ण कलाधर
- करम दयाल
- खालिक अहमद
- हरीश कुमार चौरसिया
- शौकत अली
- कलेश्वर ठाकुर
- सुरेश चन्द्र राय
- उमेश नन्द तिवारी
- हरि उराँव
- महेश्वर सारंगी
- संजय बसु मल्लिक

- सूरज सिंह बेसरा

सप्तम अध्याय- अन्य साहित्यकारो का भूमिका -

- सम्पूर्ण झारखण्ड आंदोलन में नागपुरी साहित्यकारों का स्थान

परिशिष्ट

सहायक ग्रंथो की सूची-

2. पत्र-पत्रिका-
3. साक्षात्कार सूची-
4. चित्रावली -

नोट:- प्रस्तावित अनुसंधान की रूप रेखा में आवश्यक होने पर परिवर्तन भी किया जा सकता है।

शोधकर्ता **शोध निर्देशक**

आकाश वर्मा **डॉ॰ रामजय नाईक**

एम.ए., यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ. सहायक प्राध्यापक

नागपुरी विभाग जे.एन. कॉलेज धुर्वा, राँची

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची राँची

विश्वविद्यालय, राँची